महिंद्रा कबीरा फेस्टिवल – 2021 दूसरा दिन

- **पद्मश्री मालिनी अवस्थी, रंजनी और गायत्री, जुम्मा खान और एम. के. रैना जैसे प्रतिष्ठित कलाकारों की प्रस्तुतियों के माध्यम स गुलेरिया घाट पर गूँजी कबीर-वाणी.**
- **आमंत्रित प्रतिनिधियों ने 'हेरिटेज वॉक' के दौरान देखी प्राचीन नगर बनारस की सांस्कृतिक विरासत.**

वाराणसी : विश्व की प्राचीन सांस्कृतिक नगरी बनारस में संत कबीर के दर्शन पर आधारित अनूठे 'महिंद्रा कबीरा फेस्टिवल ' के 5वें संस्करण का दूसरा दिन भव्यगुलेरिया घाट पर कबीर वाणी के साथ आरम्भ हुआ. टीमवर्क आर्ट्स और महिंद्रा समूह द्वारा आयोजित यह तीन दिवसीय महोत्सव संत कबीर के दर्शन का नवीन संस्करण है जिसका उद्देश्य है जन-जन के मन में कबीर की शिक्षा और सन्देश को पुनर्स्थापित करना. यह आयोजन संगीत, साहित्य और कला के साथ ही आध्यात्म का सुंदर मिश्रण है.

उद्घाटन सत्र में उत्सव की परिकल्पना पर अपने विचार साझा करते हुए म**हिंद्रा समूह के उपाध्यक्ष एवं प्रमुख - सांस्कृतिक आउटरीच श्री जय शाह** ने कहा कि इस फेस्टिवल की परिकल्पना करते हुए यह विशेष ध्यान रखा गया कि वाराणसी जैसी अति महत्वपूर्ण नगरी के विभिन्न रूप और यहाँ व्याप्त 'विविधता में एकात्मकता' के भाव को जैसे का तैसा प्रस्तुत किया जा सके.साथ ही साथ देश में फैली सांस्कृतिक विविधता, सूफ़ी विचारों और आध्यात्मको एक धागे में पिरोया जा सके. बड़ी संख्या में महिला कलाकार, स्वनामधन्य कलाकारों के साथ ही युवा एवं नवोदित कलाकारों के साथ इस महोत्सव को अभिनव स्वरूप देने का हमारा लक्ष्य पूरा होता है. हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत का प्रतिनिधित्व करने वाले ख्यातिलब्ध कलाकार अपनी कला को कबीर-दर्शन केसाथ एकसार करके इसे भव्य और अविस्मरणीय बनाते हैं.

टीमवर्क आर्ट्स के प्रबंध निदेशक संजोय के. रॉय ने कहा कि 15वीं शताब्दी के आध्यात्मिक साधक और दार्शनिक संत कबीर ने जीवन के सामान्य दृष्टिकोणऔर सीमाओं को लगातार तोड़ते हुए हर मनुष्य के सुख और संसार में शांति कीआवश्यकता को प्राथमिकता दी थी. 'महिंद्रा कबीरा महोत्सव' एक वार्षिक उत्सव के रूप में कबीर के शहर बनारस में इसी सन्देश को फिर से याद करता है. इस प्राचीन शहर के रंग, स्वभाव, स्वाद और कला के साथ मिल कर यह हम सबके लिए बहुत विशिष्ट हो जाता है.

फेस्टिवल का दूसरा दिन प्रातःकालीन संगीत सत्र के साथ आरम्भ हुआ. पद्मश्री पं. भजन सोपोरी के शिष्य युवा प्रतिभाशाली संगीतकार दिव्यांश हर्षित श्रीवास्तव ने सन्तूर पर राग बैरागी भैरव की मधुर और भावपूर्ण प्रस्तुति की. संगत में तबले पर और पखावज पर अमृत मिश्र ने उनका साथ दिया.तत्पश्चात 'छायावादी हिंदी कविता के रत्न' परिकल्पना के संस्थापक द्वय

चिन्मयी त्रिपाठी और जोएल मुखर्जी ने कबीर के भजन प्रस्तुत किये. सूफ़ियाना अन्दाज़ में हुई इस

प्रस्तुति में कलाकारों ने मीरा, हरिवंश राय बच्चन और रामधारी सिंह 'दिनकर' की उन रचनाओं को भी प्रस्तुत किया जिनके केंद्र में जीवन का दर्शन है. इनके साथ संगत की ओमकार सालुंके ने. इसप्रस्तुति में 'भला हुआ मोरी गगरी फूटी', 'जरा धीरे गाड़ी हांको', 'करनाफकीरी फिर क्या दिलगिरी', उड़ जाएगा हंस अकेला', 'तू का तू' आदि रचनाएँ शामिल थीं. तत्पश्चात लेखिका निलोसरी बिस्वास द्वारा लिखित पुस्तक ' ईश्वर, मनुष्यों एवं कथाओं का शहर – बनारस' पर लेखिका के साथ संजोय रॉय की बातचीत हुई,जिसमें निलोसरी ने इस किताब को लिखने के पीछे प्रेरणा और अपने भाव साझा किये.

'धरोहर घाट भ्रमण (हेरिटेज वाक)' महिंद्रा कबीरा उत्सव का विशेष आकर्षण होती है. इस वर्ष पहले भ्रमण के लिए आमंत्रित प्रतिनिधियों को वाराणसी कीआध्यात्मिक घुमावदार गलियों के आसपास के स्थानों पर ले गया। जिसमेंआलमगीर मस्जिद और गुरु तैलंग स्वामी मठ के अलावा भारतेंदु हरिश्चंद्र का आवास भी शामिल था.

दोपहर के सत्र की शुरुआत शिक्षक और आध्यात्मिक गुरु उमेश कबीर के उद्बोधनसे हुई। उमेश कबीर पिछले 20 वर्षों से संत कबीर के दर्शन को कबीरचौरा मठ,वाराणसी के मूलगढ़ी आश्रम में रह कर जी रहे हैं. उन्होंने प्रकृति,मनुष्यों और पारस्परिक संबंधों के जीवन-दर्शन और अर्थ को समझाते हुए कबीर के विभिन्न दोहे का पाठ किया। उन्होंने कहा कि "कबीर के बारे में कई गलत धारणाएं भी हैं लेकिन उनका निवारण कबीर के सच्चे अर्थ को जानने से हो जाता है.

तत्पश्चात दूसरे दिन अपराह्न कलाकार जुम्मा खान ने मेवाड़ी संगीतकारों केअपने बैंड के साथ एक भावपूर्ण, मनोहारी प्रदर्शन किया. जुम्मा खान ने अपने लोकप्रिय गीतों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।दूसरे दिन के सांध्यकालीन संगीत सत्र का आरम्भ सनबीम विद्यालय, भगवानपुर के वाद्यवृन्द गायन के साथ हुआ जिसमें विद्यार्थियों ने कबीर वाणी के साथ ही मीरा, रहीम और खुसरो की रचनाओं को प्रस्तुत किया और एकता और समावेश कासंदेश दिया।विद्यालय की सह-निदेशक प्रतिमा गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि संगीत के माध्यम से शांति और कबीर की सीख का प्रचार करना सबसे प्रभावशाली है जो विद्यार्थियों को कच्ची उम्र में ही मन को सही दिशा दे सकता है. साथ ही यह संदेश भी देता है कि सभी धर्मों में संतों की वाणी मानव मात्र केकल्याण के साथ प्रेम, एकता और भाईचारे का ही प्रसार करती हैं।

इसके पश्चात् मुंबई से पधारी गुरु गंगाधर प्रधान पुरस्कार से अलंकृत विख्यात शास्त्रीय गायिका निराली कार्तिक की प्रस्तुति हुई. निराली कार्तिक ने राग जोग के साथ कार्यक्रम आरम्भ किया. राग जोग अपने स्वभाव

में ही विरक्ति और निर्लिप्त मोक्ष की कामना का राग है. तत्पश्चात उन्होंने कबीर का लोकप्रिय भजन 'लगन बिन जागे ना निर्मोही प्रस्तुत किया, जिसका अर्थ है कि भक्ति और समर्पण के बिना सोए हुए हृदय / सोए हुए व्यक्ति का जागरण सम्भव नहीं. इसके बाद 'धीरे-धीरे रे मना' रचना ने सुननेवालों को किसी और ही अलौकिक लोक में पहुँचा दिया.

दूसरी संध्या की अगली प्रस्तुति पद्मश्री से विभूषित प्रख्यात लोक-गायिका मालिनी अवस्थी का गायन था. भारत की समृद्ध लोक और शास्त्रीय संगीत परंपराओं की पथ प्रदर्शक मालिनी अवस्थी ने 'महिंद्रा कबीरा महोत्सव' को कबीर-दर्शन के संवर्धन के लिए साधुवाद दिया साथ ही यह आशा भी व्यक्त की कि ऐसे आयोजनों के माध्यम से पिछले दो वर्षों के दुखदायी कोविड के कारणधीरे-धीरे व्यवस्थित हो रहे जीवन के साथ सभी कलाकार वापस अपनी साधना केपथ पर आगे बढ़ेंगे. अपनी मधुर आवाज़ में कबीर के भजन प्रस्तुत करके मालिनी अवस्थी ने मानो उपस्थित जन-जन के मन में कबीर की ज्योत जगा दी.

आध्यात्मिकता से भरे दूसरे दिन की आख़िरी प्रस्तुति थी सुविख्यात कलाकारद्वय रंजनी-गायत्री द्वारा तैयार एक अद्भुत संगीत-रचना 'राग और कबीरा', कबीर की कालजयी दोहवालियाँ एवं भजन सम्मिलित थे. इसके अलावा उन्होंने कर्नाटक परंपरा की एक रचना और शिव पर आधारित एक तमिल भजन की भी प्रस्तुत की. उन्होंने यह भी कहा कि कबीर की भक्ति का मूल वही है जो कर्नाटक केबहुत से संतों के उच्च दार्शनिकों की भक्ति में उपस्थित है।